Universal Journal of Academic Research (UJAR)
Peer Reviewed and Refereed Journal, ISSN NO. XXXX-XXX
Available Online:https://ujarjournal.com/archives/

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानवीय संबंध: एक विमर्श

रितु सेन
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभागशासकीय कन्या उत्कृष्ट महाविद्यालय, सागर (मध्य प्रदेश)

Abstract
कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) ने एक तकनीकी क्रांति के रूप में मानव जीवन के लगभग हर क्षेत्र में प्रवेश कर लिया है। स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, वित्त, संचार और मनोरंजन जैसे विविध क्षेत्रों में AI का बढ़ता उपयोग मानवीय संबंधों की प्रकृति को मौलिक रूप से प्रभावित कर रहा है। यह शोध पत्र कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानवीय संबंधों के अंतर्संबंधों का बहुआयामी विश्लेषण प्रस्तुत करता है। पारस्परिक संवाद, सहानुभूति, सामाजिक जुड़ाव और भावनात्मक आदान-प्रदान के पारंपरिक स्वरूपों में AI के कारण आ रहे परिवर्तनों की जांच की गई है। साथ ही, AI-आधारित संचार माध्यमों से उत्पन्न होने वाली नई संभावनाओं और चुनौतियों का भी मूल्यांकन किया गया है। यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानवीय संबंधों को न तो पूरी तरह प्रतिस्थापित कर सकती है और न ही उससे पूरी तरह अलग रहा जा सकता है; आवश्यकता एक संतुलित और नैतिक दृष्टिकोण विकसित करने की है, जहां तकनीक मानवीय मूल्यों की संवर्धक बने, विकल्प नहीं।

Keywords: कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मानवीय संबंध, सामाजिक संपर्क, डिजिटल संचार, सहानुभूति, तकनीकी मानवतावाद

1. प्रस्तावना

इक्कीसवीं सदी की सबसे प्रभावशाली तकनीकी उपलब्धियों में से एक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence - AI), ने मानव जीवन के साथ एक नए युग का सूत्रपात किया है। डॉ. सरिता सिंह के अनुसार, "कृत्रिम बुद्धिमत्ता तेजी से आधुनिक समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, जिससे मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन हो रहे हैं" । यह परिवर्तन केवल आर्थिक या औद्योगिक स्तर तक सीमित नहीं है, वरन यह हमारे सामाजिक ढाँचे और पारस्परिक संबंधों की बुनियाद को भी स्पर्श कर रहा है। जिस प्रकार औद्योगिक क्रांति ने समुदायों और पारिवारिक ढाँचों को पुनर्परिभाषित किया, उसी प्रकार AI क्रांति मानवीय संबंधों की प्रकृति, गहराई और अभिव्यक्ति के तरीकों को नया आकार दे रही है।

मानवीय संबंध सहानुभूति, विश्वास, आमने-सामने के संवाद और भावनात्मक आदान-प्रदान पर टिके होते हैं। प्रश्न यह है कि जब एक मशीन, जो एल्गोरिदम और डेटा पर चलती है, हमारे संचार, हमारी मित्रता और यहाँ तक कि हमारे अकेलेपन को दूर करने का माध्यम बन जाती है, तो इसका हमारे संबंधों की गुणवत्ता पर क्या प्रभाव पड़ता है? क्या AI मानवीय संबंधों को सुदृढ़ कर रहा है या उन्हें कमजोर? यह शोध पत्र इन्हीं जटिल प्रश्नों की पड़ताल करते हुए कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानवीय संबंधों के बीच बहुआयामी अंतर्संबंधों का विश्लेषण करेगा।

2. कृत्रिम बुद्धिमत्ता: एक परिचय और विकास

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, कंप्यूटर विज्ञान की वह शाखा है जो मशीनों को इस प्रकार डिज़ाइन करती है कि वे मानव बुद्धि की आवश्यकता वाले कार्यों को कर सकें। इसमें सीखना, तर्क करना, समस्या-समाधान, धारणा और भाषा समझना जैसी क्षमताएँ शामिल हैं। रसेल और नॉरविग के अनुसार, "AI को बुद्धिमान

एजेंटों के अध्ययन और डिजाइन के रूप में समझा जा सकता है, जो अपने पर्यावरण को समझते हैं और अपनी सफलता की संभावना को अधिकतम करने वाली कार्रवाई करते हैं"।

AI का इतिहास 1950 के दशक से आरंभ होता है, जब एलन ट्यूरिंग ने अपना महत्वपूर्ण पेपर "कंप्यूटिंग मशीनरी एंड इंटेलिजेंस" प्रकाशित किया और ट्यूरिंग टेस्ट की अवधारणा दी। 1956 में डार्टमाउथ समर रिसर्च प्रोजेक्ट को AI के क्षेत्र की औपचारिक शुरुआत माना जाता है। तब से लेकर अब तक, AI ने कई उतार-चढ़ाव देखे हैं, लेकिन 1990 के दशक के बाद से, विशेष रूप से डीप लर्निंग और न्यूरल नेटवर्क में हुई प्रगति ने AI को अभूतपूर्व ऊँचाइयों पर पहुँचा दिया है। आज AI हमारे स्मार्टफोन, सोशल मीडिया एल्गोरिदम, ऑनलाइन शॉपिंग सुझावों और यहाँ तक कि हमारे घरों में मौजूद वर्चुअल असिस्टेंट का अभिन्न अंग बन चुका है।

3. मानवीय संबंधों का स्वरूप और महत्व

मानवीय संबंध केवल सामाजिक आदान-प्रदान मात्र नहीं हैं; वे मानव अस्तित्व के मूलभूत स्तंभ हैं। परिवार, मित्रता, प्रेम और सामुदायिक जुड़ाव व्यक्ति को पहचान, सुरक्षा और अर्थ प्रदान करते हैं। इन संबंधों की विशेषता उनकी भावनात्मक गहराई, आपसी विश्वास, सहानुभूति और अपरिहार्य मानवीय स्पर्श है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि स्वस्थ मानसिक विकास और कल्याण के लिए सार्थक संबंध आवश्यक हैं। ये संबंध ही हैं जो हमें सुख-दुख, सफलता-असफलता के क्षणों में सहारा देते हैं और हमारे जीवन को समृद्ध बनाते हैं।
पारंपरिक समाजों में, विशेषकर भारतीय परिवेश में, संबंधों की एक जटिल संरचना रही है, जहाँ संयुक्त परिवार, पड़ोस और समुदाय के साथ घनिष्ठता को महत्व दिया जाता था। मौखिक कथाओं, त्योहारों और सामूहिक अनुष्ठानों के माध्यम से ये संबंध पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होते थे। लेकिन आधुनिकता, शहरीकरण और अब डिजिटल क्रांति ने इन संबंधों के स्वरूप को गहराई से प्रभावित किया है।

4. AI और मानवीय संबंध: विश्लेषण

4.1 संचार के माध्यमों में बदलाव

AI ने संचार के माध्यमों को पूरी तरह बदल कर रख दिया है। स्मार्टफोन और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, जो AI एल्गोरिदम पर चलते हैं, ने दूरियों को समाप्त कर दिया है, लेकिन साथ ही निकटता के अनुभव को भी बदल दिया है। आज हम भौतिक रूप से एक साथ बैठकर बातचीत करने के बजाय, स्क्रीन के माध्यम से जुड़े रहना अधिक पसंद करते हैं। AI-संचालित चैटबॉट और वर्चुअल असिस्टेंट (जैसे सिरी, एलेक्सा) न केवल हमारी सूचना संबंधी जरूरतें पूरी करते हैं, बल्कि कुछ हद तक हमारे अकेलेपन को भी दूर करते हैं। यह प्रश्न चिंताजनक है कि कहीं यह तकनीकी सहयोग वास्तविक मानवीय संपर्क की आवश्यकता को तो कम नहीं कर रहा।

4.2 सामाजिक अलगाव और डिजिटल कनेक्शन

शोध बताते हैं कि AI-आधारित प्लेटफॉर्म पर बिताया गया अत्यधिक समय वास्तविक दुनिया से अलगाव को बढ़ावा दे सकता है। शेरी टर्कल ने अपनी पुस्तक "अलोन टुगेदर" में तर्क दिया है कि हम डिजिटल रूप से एक साथ होते हुए भी भावनात्मक रूप से अकेले होते जा रहे हैं। सोशल मीडिया पर मिलने वाले "लाइक" और कमेंट भले ही तत्काल संतोष देते हों, लेकिन वे आमने-सामने की बातचीत में मिलने वाली भावनात्मक गहराई और प्रामाणिकता का विकल्प नहीं बन सकते। यह स्थिति "पैरासोशल रिलेशनशिप" को जन्म देती है, जहाँ व्यक्ति मीडिया व्यक्तित्वों या AI संस्थाओं के साथ एकतरफा

भावनात्मक संबंध विकसित कर लेता है, जो वास्तविक मानवीय संबंधों की जटिलताओं और चुनौतियों से रहित होते हैं।

4.3 सहानुभूति का संकट

सहानुभूति, मानवीय संबंधों का सबसे महत्वपूर्ण तत्व, दूसरे की भावनाओं को समझने और महसूस करने की क्षमता है। AI में डेटा प्रोसेसिंग और पैटर्न पहचान की अद्भुत क्षमता है, लेकिन उसमें सहानुभूति का अभाव है। एक मशीन कभी किसी के दर्द को "महसूस" नहीं कर सकती। जब हमारे संचार का एक बड़ा हिस्सा टेक्स्ट-आधारित और AI-मध्यस्थ हो जाता है, तो हम गैर-मौखिक संकेतों, आवाज के उतार-चढ़ाव और चेहरे के भावों को पढ़ने का अभ्यास खोते जा रहे हैं। यह हमारी सहानुभूति क्षमता को कमजोर कर सकता है। बच्चे और युवा, जो अपने विकासशील वर्षों में स्क्रीन के साथ अधिक समय बिता रहे हैं, उनमें सामाजिक और भावनात्मक कौशल के विकास में कमी देखी गई है।

4.4 AI-आधारित साथी और मानवीय विकल्प

हाल के वर्षों में AI-संचालित साथी ऐप्स और रोबोट विकसित किए गए हैं, विशेष रूप से बुजुर्गों या विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के लिए, जो अकेलेपन को दूर करने में सहायक हो सकते हैं। जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों में केयर रोबोट का उपयोग बढ़ रहा है। यह तकनीकी समाधान एक नैतिक दुविधा पैदा करता है: क्या हम मानवीय देखभाल और स्नेह को एक मशीन से बदल सकते हैं? कहीं ऐसा तो नहीं कि यह समाधान समस्या को और गहरा कर रहा है, जहाँ समाज मानवीय संबंधों की उपेक्षा कर तकनीकी विकल्पों की ओर भाग रहा है?

5. AI के कारण उत्पन्न चुनौतियाँ और अवसर

5. चुनौतियाँ और अवसर

5.1 प्रमुख चुनौतियाँ

डेटा गोपनीयता और निगरानी: AI सिस्टम हमारे व्यक्तिगत डेटा पर निर्भर होते हैं। हमारी पसंद, आदतें, संवाद — सब कुछ डेटा में तब्दील होकर कॉर्पोरेट संस्थाओं के पास जमा होता है। सामाजिक असमानता: AI तक पहुँच और उसका उपयोग डिजिटल डिवाइड को और गहरा कर सकता है।

5.2 अवसर

दूरियों का समापन: AI-आधारित अनुवाद उपकरण भाषा की बाधाओं को तोड़ सकते हैं। सामाजिक कौशल का विकास: ऑटिज्म स्पेक्ट्रम जैसी विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए AI-आधारित ऐप्स सामाजिक संकेतों और संवाद कौशल सीखने में सहायक हो सकते हैं।

6. संतुलन की आवश्यकता

AI और मानवीय संबंधों के बीच संतुलन स्थापित करना समय की मांग है। इसके लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसे "तकनीकी मानवतावाद" कहा जा सकता है। यह दृष्टिकोण तकनीक के विकास और उपयोग में मानवीय मूल्यों को केंद्र में रखता है।

शिक्षा प्रणाली में डिजिटल साक्षरता के साथ-साथ भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक कौशल के विकास पर भी बल देना होगा। नैतिक दिशा-निर्देश और नीतियाँ बनानी होंगी जो AI के विकास को मानव कल्याण से जोड़ें। परिवारों और समुदायों को जानबूझकर ऐसे स्थान और समय बनाने होंगे जहाँ तकनीक से दूर वास्तविक मानवीय संपर्क को बढ़ावा मिले।

डॉ. सरिता सिंह का कथन यहाँ प्रासंगिक है: "उचित नीति, नैतिक दिशा-निर्देश और मजबूत शासन के माध्यम से, AI के लाभों को अधिकतम किया जा सकता है, जबकि संभावित जोखिमों को कम किया जा सकता है"। यही दृष्टिकोण मानवीय संबंधों के संरक्षण और संवर्धन में भी सहायक होगा।

7. निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव सभ्यता की एक असाधारण उपलब्धि है, लेकिन यह मानवीय संबंधों के समक्ष अभूतपूर्व चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करती है। फिर भी, AI मानवीय संबंधों का शत्रु नहीं है। यह एक उपकरण है, और किसी भी उपकरण की तरह, इसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि हम इसका उपयोग कैसे करते हैं।

तकनीक को मानवीय संबंधों का विकल्प नहीं, बल्कि उनका संवर्धक बनना चाहिए। एक ऐसे भविष्य की कल्पना की जानी चाहिए, जहाँ AI हमें जोड़ने में मदद करे, अलग न करे; जहाँ यह हमारी सहानुभूति और मानवता को गहरा करे, क्षीण न करे।

संदर्भ सूची

1.Singh, S. (2024). The Impact of Artificial Intelligence (AI) on Human Life: Opportunities and Challenges. Research Review International Journal of Social Sciences, 4(2).
2. नगराले, वी. (2022). कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भविष्य में ग्रंथालयों पर प्रभाव. अपनी माटी.
3. Russell, S., & Norvig, P. (2016). Artificial Intelligence: A Modern Approach. Pearson.
4. Bostrom, N. (2014). Superintelligence: Paths, Dangers, Strategies. Oxford University Press.
5. Ford, M. (2015). Rise of the Robots: Technology and the Threat of a Jobless Future. Basic Books.
6. Turkle, S. (2011). Alone Together: Why We Expect More from Technology and Less from Each Other. Basic Books.
7. Schwab, K. (2018). The Fourth Industrial Revolution. Crown Business.
8. Topol, E. J. (2019). Deep Medicine: How Artificial Intelligence Can Make Healthcare Human Again. Basic Books.
9. LeCun, Y., Bengio, Y., & Hinton, G. (2015). Deep Learning. Nature, 521, 436-444.
10. McKinsey Global Institute. (2019). AI, Automation, and the Future of Work.